वैश्विक व्यापार को खतरे में डालने वाली प्रतिबंध भारत, चीन और ब्राज़ील के रूस के साथ आर्थिक संबंध

यूपीएससी प्रासंगिकता

- प्रीलिम्स: राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्व के समसामयिक घटनाएँ।
- मेंस: जनरल स्टडीज़ II: विकसित और विकासशील देशों की नीतियाँ और इस राजनीति का भारत के हितों पर प्रभाव।
- PSIR वैकल्पिक: विदेश नीति उपकरण (सामर्थ्यपूर्ण कूटनीति), कार्यात्मक और नियो-कार्यात्मक दृष्टिकोण।

इस लेख के अंतर्गत निम्न पर चर्चा:

1. सिविल सेवा परीक्षा में इस विषय का महत्व
2. चर्चा में क्यों है?
3. महत्वपूर्ण बिंदु
4. ऊर्जा सुरक्षा पर विशेषज्ञों के विचार
5. निष्कर्ष
6. प्रीलिम्स अभ्यास प्रश्न
7. मेंस अभ्यास प्रश्न

Result Mitra

समाचार में क्यों है?

• नाटो के महासचिव मार्क रुटे ने हाल ही में चेतावनी दी कि भारत, चीन और ब्राज़ील जैसे देशों को रूस के साथ व्यापार करते रहने पर, विशेष रूप से तेल आयात के मामले में, गंभीर प्रतिबंधों का सामना करना पड़ सकता है।

• यह चेतावनी ऐसे समय में आई है जब रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण वैश्विक कूटनीतिक स्थिति बदल रही है और प्रमुख वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के बीच व्यापार तनाव बढ़ रहे हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु:

1. रुटे की चेतावनी: नाटो के महासचिव मार्क रुटे ने चेतावनी दी कि रूस के साथ व्यापार करने वाले देशों, विशेष रूप से भारत, चीन और ब्राज़ील, को प्रतिबंधों का सामना करना पड़ सकता है।

• उन्होंने वाशिंगटन से यह बात की और जोर दिया कि अगर ये देश रूस को यूक्रेन संघर्ष को लेकर शांति वार्ता करने के लिए मजबूर नहीं करते, तो उन्हें गंभीर प्रतिबंधों का सामना करना पड़ सकता है।

2. भारत की प्रतिक्रिया: रुटे की चेतावनी पर भारत के विदेश मंत्रालय ने कड़ी प्रतिक्रिया दी और यह कहा कि भारतीय जनता की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करना सर्वोत्तम प्राथमिकता है।

• मंत्रालय के प्रवक्ता रंधीर जयसवाल ने यह स्पष्ट किया कि भारत वैश्विक बाजार में उपलब्ध आपूर्ति के आधार पर काम करता है, और इसका ऊर्जा सुरक्षा के प्रति संकल्प पर जोर दिया।

• उन्होंने यह भी कहा, "हम इस मुद्दे पर किसी भी दोहरे मापदंड की चेतावनी देते हैं," यह संकेत देते हुए कि रूस के साथ व्यापार संबंधों की निगरानी में असंगति देखी जा रही है।

3. द्वितीयक प्रतिबंधों की समझ: द्वितीयक प्रतिबंध वे दंडात्मक उपाय होते हैं जो उन देशों या कंपनियों पर लगाए जाते हैं जो पहले से प्राथमिक प्रतिबंधों (जैसे रूस पर) के तहत आने वाले देशों के साथ व्यापार करते हैं।

• इन प्रतिबंधों का उद्देश्य लक्षित देश को वैश्विक व्यापार से अलग करना है और अन्य देशों को उस देश के साथ आर्थिक संबंध तोड़ने के लिए मजबूर करना है। इन प्रतिबंधों के खतरे ने वैश्विक ऊर्जा और व्यापार सुरक्षा पर चिंता पैदा कर दी है।

4. भारत, चीन और ब्राज़ील पर सामरिक दबाव: वैश्विक दबाव के बावजूद, भारत, चीन और ब्राज़ील रूस से तेल आयात करना जारी रखते हैं, क्योंकि रूस पश्चिमी देशों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के कारण अपने कच्चे तेल पर भारी छूट प्रदान कर रहा है।

• रुटे की टिप्पणियाँ, जो इन देशों से पुतिन पर शांति वार्ता के लिए दबाव डालने का आग्रह करती हैं, पश्चिमी देशों की सामरिक सोच को दर्शाती हैं, जो वैश्विक व्यापार संबंधों का leverage के रूप में उपयोग करना चाहते हैं।

Result Mitra

5. भारत की ऊर्जा सुरक्षा चिंताएँ: भारत की बढ़ती रूस के कच्चे तेल पर निर्भरता इस भू-राजनीतिक गतिरोध का एक केंद्रीय बिंदु बन गई है।

• भारत अपने कच्चे तेल की लगभग 88% ज़रूरतों का आयात करता है, और वर्तमान में रूस इन आयातों का लगभग 40% हिस्सा है।

• नाटो की चेतावनियों के बावजूद, भारत ने अपने आयातों को कम नहीं किया है और यह मानता है कि वह उस देश से तेल खरीदेगा जो सबसे अच्छी कीमत पर तेल उपलब्ध कराए, बशर्ते वह तेल प्रतिबंधित न हो।

• पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने यह स्पष्ट किया कि भारत को तेल आपूर्ति में किसी भी प्रकार की रुकावट की चिंता नहीं है, क्योंकि देश ने अपनी तेल आपूर्ति स्रोतों को विविधीकृत किया है।

• अब भारत के तेल आयात 40 देशों से आते हैं, जबकि युद्ध से पहले यह संख्या 27 थी। रूस के तेल की ओर यह महत्वपूर्ण बदलाव मुख्य रूप से रूस द्वारा दी जा रही छूट की कीमतों के कारण है।

6. शांति वार्ता के लिए 50 दिनों की समय सीमा: पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने रूस और यूक्रेन के बीच शांति वार्ता के लिए 50 दिनों की समय सीमा का प्रस्ताव रखा है।

• ट्रम्प ने चेतावनी दी कि अगर समझौता नहीं हुआ तो भारत और चीन जैसे देशों पर द्वितीयक शुल्क (secondary tariffs) लगाए जा सकते हैं।

• यह स्थिति भारत को एक नाजुक स्थिति में डाल देती है, जहां उसे अपनी ऊर्जा जरूरतों को प्रतिबंधों के खतरे से संतुलित करना है।

7. वैश्विक व्यापार और कूटनीतिक तनाव: जैसे-जैसे अमेरिका और नाटो रूस पर दबाव बनाने के लिए द्वितीयक प्रतिबंधों का इस्तेमाल कर रहे हैं, भारत, चीन और ब्राजील जैसे देश जटिल कूटनीतिक परिस्थितियों में अपना रास्ता ढूंढ रहे हैं।

• ट्रम्प प्रशासन ने रूस के साथ व्यापार करने वाले देशों पर शुल्क लगाने की संभावना जताई है।

• हालांकि, भारत की वैश्विक ऊर्जा बाजारों में रणनीतिक महत्व को देखते हुए, यह स्पष्ट नहीं है कि ये शुल्क लागू किए जाएंगे या केवल कूटनीतिक दबाव के रूप में रहेंगे।

8. भारत के विविध तेल स्रोत: रूस के कच्चे तेल के बढ़ते हिस्से के बावजूद, भारतीय सरकार अपनी ऊर्जा आपूर्ति सुरक्षित करने में विश्वास व्यक्त करती है, क्योंकि भारत के पास आपूर्ति के लिए विविध स्रोत हैं।

• रूस से भारत का तेल आयात यूक्रेन संघर्ष की शुरुआत के बाद बढ़ा है, लेकिन भारत पूरी तरह से रूस पर निर्भर नहीं है। किसी भी आपूर्ति में व्यवधान की स्थिति में, भारत अपने पारंपरिक तेल आपूर्तिकर्ताओं, जैसे इराक, सऊदी अरब और यूएई पर निर्भर रह सकता है।

ऊर्जा सुरक्षा और द्वितीयक प्रतिबंधों पर विशेषज्ञों के विचार:

Result Mitra

1. डॉ. सी. राजा मोहन:

"भारत का रूस के साथ व्यापार बनाए रखने का रुख सिर्फ तेल के बारे में नहीं है, बल्कि यह रणनीतिक स्वायत्तता (strategic autonomy) से भी जुड़ा है।

• हालांकि द्वितीयक प्रतिबंध कूटनीतिक दबाव बनाने का एक उपकरण हैं, भारत इन दबावों को सावधानीपूर्वक निपटते हुए अपनी ऊर्जा सुरक्षा और विदेश नीति हितों की रक्षा कर रहा है। भारत की दीर्घकालिक गैर-संरेखण नीति है और वह इन भू-राजनीतिक विवादों में अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देगा।"

2. डॉ. अनिल जैन (सेंटर फॉर एनर्जी स्टडीज):

"रूस के तेल पर बढ़ती निर्भरता एक अस्थायी रणनीति है जो भारत की तात्कालिक ऊर्जा जरूरतों को कम कीमत पर पूरा करती है।

• हालांकि, लंबी अवधि में भारत को अपनी ऊर्जा स्रोतों को विविध करना होगा और नवीकरणीय ऊर्जा में अधिक निवेश करना होगा, ताकि वह अपनी ऊर्जा भविष्य की सुरक्षा कर सके।

• तेल व्यापार से जुड़े भू-राजनीतिक जोखिम भारत को वैकल्पिक ऊर्जा साझेदारियों और तकनीकी नवाचारों की खोज करने के लिए प्रेरित करेंगे।"

3. डॉ. एस. जयशंकर:

"भारत की ऊर्जा सुरक्षा सर्वोपरि है, और रूस के साथ निरंतर जुड़ाव वैश्विक बाजार की वास्तविकताओं का एक सोचा-समझा जवाब है।

• हालांकि भू-राजनीतिक स्थिति तरल (fluid) है, भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि वह अपनी ऊर्जा नीतियों पर अपनी संप्रभुता से समझौता न करे।

• द्वितीयक प्रतिबंध निश्चित रूप से दबाव डालेंगे, लेकिन भारत इस स्थिति का मूल्यांकन करते हुए दीर्घकालिक रणनीतिक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करेगा।"

निष्कर्ष:

रूस के यूक्रेन में किए गए कार्यों को लेकर वर्तमान वैश्विक व्यापार का विवाद विशेष रूप से उन देशों के लिए महत्वपूर्ण है जिनके रूस के साथ महत्वपूर्ण व्यापारिक संबंध हैं, जैसे भारत, चीन और ब्राजील। जैसे-जैसे अमेरिका और नाटो द्वितीयक प्रतिबंधों का उपयोग कूटनीति के उपकरण के रूप में कर रहे हैं, इन देशों पर अपनी स्थिति पुनः विचार करने का दबाव बढ़ता जा रहा है। आने वाले महीने भारत के लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं, क्योंकि उसे अपनी ऊर्जा सुरक्षा जरूरतों को वैश्विक कूटनीतिक रिश्तों के साथ संतुलित करना होगा।

Result Mitra

प्रीलिम्स अभ्यास प्रश्न:

1. निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/से कथन द्वितीयक प्रतिबंधों और भारत के रूस के साथ व्यापार के बारे में सही है/हैं?

1. द्वितीयक प्रतिबंध वे दंडात्मक उपाय होते हैं जो उन देशों पर लगाए जाते हैं जो पहले से प्राथमिक प्रतिबंधों के तहत आने वाले देशों (जैसे रूस) के साथ व्यापार करते हैं।
2. भारत ने अमेरिकी दबाव और नाटो की प्रतिबंध चेतावनियों के जवाब में रूस के साथ अपना व्यापार पूरी तरह से रोक दिया है।
3. अमेरिका ने भारत के खिलाफ द्वितीयक प्रतिबंधों का प्रस्ताव दिया है, क्योंकि भारत रूस से तेल आयात करता है, खासकर यूक्रेन संघर्ष के संदर्भ में।
4. जून 2024 में भारत के रूस से तेल आयात ने भारत के कुल तेल आयात का 43% हिस्सा बना लिया, जिससे रूस भारत का सबसे बड़ा तेल आपूर्तिकर्ता बन गया।

सही उत्तर चुनें:

a) 1 और 3 b) 1, 3, और 4
c) 2 और 4 d) 2 और 3

उत्तर: a) 1 और 3

2. द्वितीयक प्रतिबंधों का वैश्विक ऊर्जा बाजारों पर प्रभाव के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत और चीन जैसे देशों पर लगाए गए द्वितीयक प्रतिबंध वैश्विक तेल आपूर्ति को बाधित कर सकते हैं, जिससे ऊर्जा की कीमतें बढ़ सकती हैं।
2. रूस के कच्चे तेल पर भारत की निर्भरता यूक्रेन युद्ध की शुरुआत के बाद कम हो गई है, क्योंकि देश ने अपने तेल स्रोतों को विविधीकृत किया है।
3. अमेरिका ने उन देशों पर 100% द्वितीयक शुल्क लगाने का प्रस्ताव दिया है जो रूस से तेल खरीदना जारी रखते हैं, जब तक रूस और यूक्रेन के बीच शांति समझौता नहीं हो जाता।
4. भारत ने अमेरिका और नाटो के दबाव के कारण रूस से तेल आयात को घटा दिया है, और सऊदी अरब और इराक जैसे पारंपरिक आपूर्तिकर्ताओं से अधिक तेल खरीदने का निर्णय लिया है।

सही उत्तर चुनें:

a) 1, 3, और 4
b) 1 और 2
c) 2 और 3
d) 1, 2, और 3

उत्तर: b) 1 और 2

Result Mitra

मेंस अभ्यास प्रश्न:

• GS-2 - "द्वितीयक प्रतिबंधों का वैश्विक भू-राजनीति में कूटनीतिक दबाव के उपकरण के रूप में उपयोग बढ़ रहा है। इनके भारत की ऊर्जा सुरक्षा और विदेश नीति पर, विशेष रूप से रूस से व्यापार के संदर्भ में, प्रभावों पर चर्चा करें।" (15 अंक, 250 शब्द)

• PSIR वैकल्पिक - "समकालीन अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में द्वितीयक प्रतिबंधों की भूमिका की जांच करें। ये प्रतिबंध भारत की संप्रभुता और उसकी विदेश नीति को कैसे प्रभावित करते हैं, खासकर रूस से तेल आयात के संदर्भ में?" (15 अंक, 250 शब्द)

Result Mitra